लैंगिक परिप्रेक्ष्य में पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण (मूल्यांकन उपकरण)

(क) पहचान डाटा

1. पाठ्यपुस्तक का नाम –
2. कक्षा -
3. भाषा -
4. विषय -
5. लेखक समूह -

   पुरूष :

   महिला :
6. संपादक समूह -

   पुरूष :

   महिला :
7. प्रकाशन का महीना और वर्ष -
8. पृष्ठों की कुल संख्या -
9. पाठों की कुल संख्या -
10. प्रकाशक का पूरा पता -
11. आवरण पृष्ठ/पिछले का लैंगिक पूर्वाग्रह और रूढिबंधन की दृष्टि से वर्णन-

    क. दृश्यकों/दृश्य चित्रों का वर्णन (पुरूष/स्त्री/लिंग - निरपेक्ष/किसी अन्य दृष्टि से)

    ख. विषयवस्तु का वर्णन -

12. आवरण पृष्ठ/पिछले के भीतरी भाग का लैंगिक पूर्वाग्रह और रूढिबंधन की दृष्टि से वर्णन -

    क. दृश्य का वर्णन

    ख. विषयवस्तु का वर्णन -

13. कोई अन्य सूचना -

14. सुझाव -

(ख) विषयवस्तु और दृश्यों का विश्लेषण

1. अध्ययन/पाठ/इकाई -

2. नाम शीर्षक/मूल विषय

पृष्ठों की कुल संख्या	**विषयवस्तु**	**दृश्य विश्लेषण**	**टिप्पणी**	**सुझाव**	**अभ्यास/ परियोजनाएं / क्रियाकलाप**

विषयवस्तु और दृश्यकों का विश्लेषण करते समय, निम्नलिखित ब्यौरों/बातों पर ध्यान देने की जरूरत है –

विषयवस्तु विश्लेषण

- विषयवस्तु के विश्लेषण में इन बातों की जांच की जाएगी:
    - विषयवस्तु का बंटवारा।
    - विषयवस्तु में बालकों और बालिकाओं, पुरूषों और स्त्रियों के लिए प्रयुक्त विशेषण।
    - पाठ्य/पाठ्यसामग्री में पुरूषों और स्त्रियों में परिलक्षित विविधता।
    - काम-धंधों में लैंगिक प्रतिनिधित्व।

- भूमिकाएं - पुरूष/स्त्री की ।
- बालकों/पुरूषों और बालिकाओं/स्त्रियों/दोनों की के संबंध में मानव मूल्य ।
- रूढ़िगत व्यवहार का संदर्भ/उल्लेख।
- बालक/बालिकाओं, पुरूषों/स्त्रियों अथवा दोनोंके योगदानों/उपलब्धियों को दिया गया महत्व।

- क्या उपान्तिक/उपेक्षित समूहों और उनकी संस्कृतियों तथा जीवन शैलियों को प्रतिनिधित्व दिया गया है?
- क्या पूर्वाग्रहों का उल्लेख किया गया है ?
- क्या कथावस्तु/कहानी में किसी एक जाति और वर्ग का ही उल्लेख किया गया है ?
- शक्तिसंबंधों को किस प्रकार परिलक्षित किया गया है ?
  - भोजन, शिक्षा,बचत, खर्च, स्वास्थ्य और अन्य किसी क्षेत्र में निर्णय कौन लेता है ?
- क्या स्त्रियों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किए गए योगदानों का विषयवस्तु में पर्याप्त मात्रा में उल्लेख किया गया है या नाममात्र रूप में ही ?
- स्त्रियों को समाजके भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में निम्नलिखित के संबंध में कैसे दर्शाया गया है -

  परिवार :

  विद्यालय :

  कार्यस्थल :

  समाज :

- निष्पक्षता की परिधि में लैंगिक दृष्टि से कार्यभार का बंटवारा -

- आय कमाने के लिए सेवाओं और वस्तुओं के उत्पादन से संबंधित उत्पादक क्रियाकलाप कौन संपन्न करता है ?
- पानी लाने, बच्चों की देखभाल और पालनपोषण करने, ईधन के लिए लकड़ी लाने से संबंधित क्रियाकलाप कौन करता है ?

- सामुदायिक क्रियाकलापों जैसे कल्याण संबंधी क्रियाकलापों, बैठकों के आयोजन, दाह संस्कार और विवाहोत्सव तथा धार्मिक क्रियाकलापों, पास-पड़ोस की बैठकों आदि में कौन भाग लेता है ?
  - ऐसे क्रियाकलापों में पहल कौन करता है - पुरूष/स्त्रियां/दोनों

- निम्नलिखित किस्म के परिवर्तनों के अभिकर्ता के रूप में किन्हें (स्त्रियों/पुरूषों को) दिखाया जाता है ?
  - संघर्ष
  - विरोध/असहमति
  - वैज्ञानिक अभिवृत्ति/स्वभाव/विभाजन
  - वैज्ञानिक उपलब्धियां
  - आंदोलन

दृश्यक/दृश्य सामग्री

- पुरूषों और स्त्रियों का प्रतिनिधित्व/प्रस्तुतीकरण -

  सक्रिया भूमिका -

  निष्क्रियभूमिका -
- निम्नलिखित के संबंध में पुरूषों और स्त्रियों का चित्रण -

भूमिकाएं -

व्यवसाय/कामधंधे -

पोशाक/वस्त्र -

रूप प्रस्तुति -

- दृश्यकों में पुरूषों और स्त्रियों की स्थित/प्रस्तुति -
- भिन्न - भिन्न क्रियाकलापों को संपन्न करने में पुरूषों और स्त्रियों, बालकों और बालिकाओं को किस प्रकार चित्रित किया गया है ?
- आकृति/तस्वीर में सक्रिय (मुख्य पात्र) कौन है ?
- आकृति/तस्वीर में निष्क्रिय (आदेश लेने वाला) कौन है ?
- आकृति/तस्वीर में किसको प्रतिष्ठाप्राप्त दिखाया गया है ?
- हाव-भाव क्या दर्शातें हैं ?
- वेश-भूषा क्या दर्शाती है ?
- आंखें किस ओर लगी हैं ?

(ग) विषयवस्तु और दृश्यकों में पात्रों की कुल संख्या :

पुरूष -

स्त्रियां -

दोनों (जैसे, मानव, वे, उन्हें, लोग, हमें, हम, तुम, वह आदि)

(घ) प्रश्नावलियां/अभ्यास-माला/गतिविधियां/क्रियाकलाप

- क्या प्रश्नावलियों से लिंग, वर्ग, जाति संबंधी मुद्दों का पता लगाया जा सकता है ?

- क्या प्रश्नावलियों से शक्ति संबंधों का विरोध किया जा सकता है ?
- क्या प्रश्नावलियों की सहायता से बच्चे अपने जीवन में अनुभूत वास्तविकताओं को समझ सकते हैं ?
- क्या इससे विवेचनात्मक चिंतन और समस्या समाधान के कौशलों का संवर्धन होता है ?
- क्या इससे बच्चों में कल्पना शक्ति और सृजनात्मकता को बढ़ावा मिलता है?
- क्या इससे बच्चों में दलनिष्ठा और सहयोग की भावना को प्रोत्साहन मिलता है ?

(ङ) विषयवस्तु और दृश्य चित्रण के संदर्भ में पाठ्यपुस्तकों का समग्र मूल्यांकन निम्नलिखित की दृष्टि से पुस्तक की समीक्षा -

- लैंगिक पूर्वाग्रह/झुकाव
- लैंगिक रूढ़िवादिता/रूढ़िबंधन
- लैंगिक दृष्टि में समावेशी
- लैंगिक दृष्टि से निष्पक्ष/तटस्थ
- शक्ति संबंध
- विषयगत संगतता, संबद्धता और प्रासंगिकता
- प्रौद्योगिकी का संदर्भ और उसका पुरूषों/बालकों/बालिकाओं/स्त्रियों, और दोनों द्वारा प्रयोग
- शास्त्र/अनुशासन की प्रगति और कक्षा के विभिन्न स्तरों पर स्थिति निर्धारण (विषयगत)

* ये उपकरण स्वरूप की दृष्टि से सुझावात्मक हैं। इन्हें ज्यों का त्यों अथवा संदर्भ की आवश्यकता के अनुसार यथोचित परिवर्तन के साथ अपनाया जा सकता है।

परिशिष्ट - ख

पारिभाषिक शब्दावली

- **जेंडर (लिंग)** - एक सामाजिक उद्भावना (रचना) है। इसका तात्पर्य पुरूषों और स्त्रियों के बीच पाए जाने वाले उन सामाजिक अंतरों से है जो संबंधों के भीतर सोचे, समझे और पाए जाते हैं। भिन्न-भिन्न समाजों एवं संस्कृतियों के बीच वे भिन्न-भिन्न के होते हैं, और समय के साथ बदलते रहते हैं। लिंग/जेंडर संस्कृति विशिष्ट चर/परिवर्तनीय संकल्पना है। लिंग/जेंडर का प्रयोग किसी खास सामाजिक संदर्भ में स्त्रियों और पुरूषों की भूमिकाओं, जिम्मेदारियों, विवशताओं, बाध्यताओं, अवसरों और जरूरतों का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है।

- **जेंडर बायस (लैंगिक पूर्वाग्रह)** - पाठ्य सामग्रियों और शिक्षण प्रक्रियाओं में बालिकाओं तथा स्त्रियोंके योगदानोंको नजरंदाज़ करना या कम आंकना।

- **जेंडर इन्क्लूसिव (लिंग निरपेक्ष)** - इसमें दोनों लिंगों या स्त्री-पुरूषों दोनों द्वारा किए गए क्रियाकलापों को शामिल किया जाता है।

- **जेंडर न्यूट्रल (लिंग निरपेक्ष)** - ऐसी पाठ्यसामग्री जिसमें प्रमुख रूप से प्राकृतिक आवास का वर्णन किया गया हो। यह पुरूषों या स्त्रियों के प्रतिलक्षित नहीं होती और दोनों लिंगों को समानरूप से प्रभावित करती है। इसमें स्त्रियों, पुरूषों, बालिकाओं और बालकों को एक समरूप समूह

का अंग माना जाता है। लिंग निरपेक्ष नीतियों के अंतर्गत संसाधनों तथा दायित्वों के वर्तमान लैंगिक विभाजन को चुनौती नहीं दी जाती यानी विरोध नहीं किया जाता। इसमें पुल्लिंगता और स्त्रीलिंगता के उल्लेख से बचा जाता है और स्त्रियों तथा पुरूषों के सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों का उल्लेख नहीं किया जाता।

- **जेंडर स्टीरियोटाइपिंग (लैंगिक रूढ़िबंधन)** - इससे तात्पर्यहै किसी एक लिंग यानी पुरूष या स्त्री को पूर्वाधारित, पूर्वाग्रही और समाजिकरण की प्रक्रिया के प्रभाव के आधार पर, भूमिकाएं, कार्य और जिम्मेदारियां सौंपना। लैंगिक रूढ़िबंधन मीडिया के भिन्न-भिन्न रूपों जैसे फिल्मों, श्रव्य दृश्यकों एवं ऑडियो, वार्तालाप, चुटकुलों और पुस्तकों में पाया जाता है, जहां स्त्री और पुरूष परंपरागत भूमिकाओं या कार्यों के अनुसार अपनी सामाजिक भूमिकाएं अदा करते हैं।